

पद ३२३

(रागः काफी – तालः दीपचंदी)

मन समझ ले रे गँवारा । नहि आवे बार बार मनुख जन्म
अवतारा ॥ध्रु.॥ आया था मन कहां से । जाता तू मन किधर से ।
इसकी तो राह पहचान कर । माया में मन तू मत मर ॥१॥ माया जो
मन होय झूठी । दुनिया जो मन होय कोटी । दो दिन भरा है बजार ।
वहीमे करले गुजारा ॥२॥ मानिक कहत है मन । ये बात भूल मत
सुन बे । एक राम तेरा दाता । तेरे साथ कोई नहीं आता ॥३॥